Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

A Referred Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	*Research Paper*	*Paper No. VBRP-43*

पर्यावरण : भारतीय सनातन दृष्टि (Environment – India's Eternal Vision)

डॉ. शोभा आर. मिश्र, आचार्य एवं अध्यक्षए दर्शनशास्त्र विभाग, पी.एम.एस.सी.-ओ.आई.ई.ए शासकीय माधव महाविद्यालयए उज्जैन (मध्य प्रदेश)

सारांश: वेदों के दार्शनिक भाग उपनिषदों में प्रकृति एवं प्राकृतिक नियमों, ऋत आदि की स्पष्ट चर्चा की गई है। ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं तैत्तिरीय उपनिषद में हमें इस संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। यद्यपि वर्तमान विज्ञान में पर्यावरण विज्ञान का जनक जर्मन प्रकृतिवादी अलेक्ज़ेंडर वॉन हम्बोल्ट (Alexander von Humboldt) को माना जाता है, तथापि भारतीय ज्ञान परम्परा (Indian Knowledge System – IKS) की दृष्टि से यह विज्ञान पुरुष सूक्त एवं नासदीय सूक्त (ऋग्वेद) में सृष्टि, ब्रह्माण्ड तथा प्रकृति के समस्त तत्त्वों के ज्ञान के रूप में विद्यमान है।

कुंजी शब्द: वेद, वैदिक, पर्यावरण, ऋत, प्रकृति एवं पंचमहाभूत।

सहनाववतु
ॐ सह नाववतु।
सह नौ भुनक्तु।
सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥
(तैत्तिरीय उपनिषद्(
अर्थात् हम सभी मिलकर इस पृथ्वी पर शान्तिपूर्वक रहें।

पर्यावरण की चिंता हमारे वैदिक ऋषि-मुनियों द्वारा अत्यन्त गंभीरता एवं व्यापक दृष्टि के साथ की गई है। इसी कारण हमारे प्राचीन भारतीय चिंतन में प्राकृतिक तत्त्वों, विशेषकर पंचमहाभूतों का निरन्तर विशेष महत्व रहा है। ये पंचमहाभूत—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश—समस्त सृष्टि के आधार माने गए हैं। सांख्य दर्शन इन्हें पंचतन्मात्राओं के रूप में भी स्वीकार करता है।

यही कारण है कि हमारे देश में जनसामान्य के जीवन, त्योहारों, रीति-रिवाजों, उत्सवों एवं धार्मिक परम्पराओं में इन प्राकृतिक तत्त्वों के प्रति श्रद्धा, पूजा तथा सम्मान की भावना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। सृष्टि एवं मनुष्य के मध्य संतुलन स्थापित करने वाले सेतु के रूप में वैदिक वाङ्मय में प्रकृति के विविध आयामों

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

का अत्यन्त सुंदर, काव्यमय एवं दार्शनिक निरूपण प्राप्त होता है। प्रत्येक प्राकृतिक घटना को प्रतीक, रूपक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से व्याख्यायित किया गया है, जिससे मानव और प्रकृति के मध्य समन्वित एवं संतुलित संबंध स्थापित हो सके।

इसी संदर्भ में हमारे साहित्य में अनेक उपमाएँ प्राप्त होती हैं।

कल्पवृक्ष भारतीय वाङ्मय की एक काव्यमयी, सौन्दर्यमयी एवं कालजयी उपमा है, जो वास्तविकता के धरातल पर अपनी रूपात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करती है। प्रतीकात्मक दृष्टि से यदि इसे समझा जाए, तो कल्पवृक्ष वह आधार है जहाँ से मनुष्य अपने जीवन में परिवर्तन, विकास, सृजन तथा रचनात्मकता के सौन्दर्य की प्रेरणा प्राप्त करता है। यह कहना अनुचित न होगा कि हमारा आत्मतत्त्व ही वह कल्पवृक्ष है, जो जितना अधिक सुदृढ़ होगा, उतने ही मधुर एवं लोककल्याणकारी फल प्रदान करेगा।

पर्यावरण की शुद्धता के लिए यज्ञ एवं ऋत की अवधारणा वैदिक साहित्य का एक अद्भुत वैज्ञानिक पक्ष प्रस्तुत करती है। यह न केवल ब्रह्माण्डीय संतुलन) Cosmic Balance) की व्याख्या करती है, बल्कि पारिस्थितिक नैतिकता) Ecological Ethics) के उन मूलभूत सिद्धांतों को भी उद्घाटित करती है, जो मानव को निरन्तर प्रकृति के प्रति संवेदनशील, उत्तरदायी तथा जागरूक बने रहने का संदेश देते हैं।

हमारे वैदिक वाङ्मय में पारिस्थितिकी तंत्र)Ecosystem) तथा प्रकृति के सार्वभौमिक नियमों को 'ऋत' के रूप में सर्वत्र प्रतिपादित किया गया है। 'ऋत' का सिद्धांत प्रकृति, समाज और समस्त सृष्टि के संतुलित एवं सुव्यवस्थित संचालन का आधार माना गया है।

सांख्य दर्शन के अनुसार सृष्टि की रचना में 25 तत्त्वों का योगदान माना गया है। इनमें पंचमहाभूत तथा पंचतन्मात्राएँ अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। ये तत्त्व सम्पूर्ण भौतिक जगत की संरचना एवं उसके संचालन के मूल आधार माने जाते हैं।

तन्मात्राएँ) सूक्ष्म तत्त्व(

तन्मात्रा अर्थात् किसी स्थूल तत्त्व का सूक्ष्म अथवा मूल रूप, जो उसके विशिष्ट गुण का प्रतिनिधित्व करता है।

गुण)तन्मात्रा(	स्थूल रूप)महाभूत(	सूक्ष्म स्वरूप / विशेषता
शब्द	आकाश)ध्वनि(	प्रसार, स्थान एवं रिक्तता
स्पर्श	वायु) स्पर्श(	गति एवं कंपन
रूप	अग्नि)तेज/रूप(	ऊष्मा एवं प्रकाश
रस	जल) स्वाद(	तरलता, रस एवं प्रवाह
गन्ध	पृथ्वी) गन्ध(	ठोस आकार एवं कठोरता

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

कपिल मुनि, जो सांख्य दर्शन के प्रवर्तक माने जाते हैं, उनके अनुसार सृष्टि की रचना के लिए ये तत्त्व अत्यन्त आवश्यक हैं। दर्शनशास्त्र के प्रत्येक अध्याय में पंचमहाभूतों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। श्रीमद्भगवद्गीता के सातवें अध्याय 'ज्ञान-विज्ञान योग' में भगवान श्रीकृष्ण अपनी अष्टधा प्रकृति का वर्णन करते हुए कहते हैं—

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा॥
(श्रीमद्भगवद्गीता 7.4)

अर्थात्— पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश तथा मन, बुद्धि और अहंकार—ये आठ प्रकार से विभक्त मेरी प्रकृति हैं।

हमारे वैदिक ऋषियों ने इन्हीं पंचमहाभूतों की उपासना की है तथा उनके संरक्षण एवं संतुलन पर विशेष बल दिया है। ऋग्वेद में कहा गया है—

"अग्निः पूर्वेभिरृषिभिरीड्यो नूतनैरुत।"
(ऋग्वेद 1.1.2)

अर्थात्— अग्नि की उपासना प्राचीन तथा वर्तमान दोनों युगों के ऋषियों द्वारा की जाती रही है। वह सभी के द्वारा स्तुति के योग्य है।

यहाँ 'अग्नि' शब्द केवल भौतिक अग्नि का ही द्योतक नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक मूल्यवान, ऊर्जावान तथा चेतन तत्त्व का भी प्रतीक है। यज्ञ की वेदी में प्रज्वलित अग्नि जहाँ एक ओर भौतिक अग्नि का स्वरूप है, वहीं वैदिक वाङ्मय में 'अग्नि' का अर्थ मानसिक, प्राणमय तथा ज्ञानमय चेतना से भी संबंधित माना गया है। इस प्रकार अग्नि का स्वरूप केवल लौकिक न होकर आध्यात्मिक एवं दार्शनिक भी है। (संदर्भ :वासुदेव शरण अग्रवाल, कला और संस्कृति, प्रभात प्रकाशन, 2024, ISBN: 978-93-5322-943-6)

हमारे वैदिक ऋषि सम्पूर्ण जगत के प्रति अत्यन्त सजग, संवेदनशील एवं उत्तरदायी थे। उनका उद्देश्य केवल आध्यात्मिक चिंतन तक सीमित नहीं था, बल्कि वे इस बात के प्रति भी चिंतित थे कि इस ब्रह्माण्ड की प्राकृतिक सुंदरता सदैव बनी रहे। वे चाहते थे कि इसकी नदियाँ, पर्वत, हरितिमा, खनिज, वन एवं मैदान सुरक्षित रहें, पशुधन का संवर्धन होता रहे तथा मानव समाज में सदाचार, नैतिकता एवं विचारशीलता का निरंतर विकास होता रहे। यही दृष्टिकोण भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण संरक्षण तथा सतत विकास की आधारशिला के रूप में परिलक्षित होता है।

"गुहं ब्रह्म तदिदं ब्रवीमि।
न हि मानुषाच्छ्रेष्ठतरं हि किञ्चित्॥"
(शान्ति, पृ. 180/92; पृष्ठ 31, भारत सावित्री, वासुदेव शरण अग्रवाल, ISBN: 978-81-7309-562-7, HB/2021)

निःसंदेह भारतीय संस्कृति में समस्त भूतमात्र में व्याप्त एक अन्तर्यामी परम तत्त्व के साथ इस लोक तथा लोकमंगल की भावना प्राचीन काल से ही विद्यमान रही है। इसी कारण भारतीय चिंतन में कल्पवृक्ष की अवधारणा केवल एक काल्पनिक प्रतीक नहीं है, बल्कि वह मनुष्य की उदात्त भावना का साकार रूप है।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

इसके माध्यम से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, पंचमहाभूतों तथा समस्त सृष्टि में परम तत्त्व की अनुभूति का भाव व्यक्त किया गया है।

विचार की ज्योति एवं आत्मा की ज्योति मूलतः एक ही हैं। जब यह चेतना प्रकाशित होती है, तब सम्पूर्ण जीवन प्रकाशमान हो उठता है। इस दृष्टि से कल्पवृक्ष मानव-मस्तिष्क के प्रकाशित संकल्प, सृजनशीलता तथा लोककल्याणकारी शक्ति का प्रतीक है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी एवं विनोबा भावे ने भी इसी उदात्त भावना के आधार पर पृथ्वी एवं पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। गांधीजी ग्राम विकास, भूमि की उर्वरता, जल की शुद्धता, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा वृक्षों के महत्व को भली-भाँति समझते थे। वे प्रत्येक व्यक्ति में उसी सार्वभौमिक तत्त्व की उपस्थिति को स्वीकार करते थे। इसी प्रकार विनोबा भावे की भूमि-संबंधी विचारधारा भी प्रकृति एवं समाज के संतुलित विकास पर आधारित थी।

ग्राम स्वराज की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए विनोबा भावे ने कहा कि यदि समस्त भूमि और संपत्ति को केवल राष्ट्र अथवा विश्व की संपत्ति मान लिया जाए, तो विचार की विशालता तो अवश्य प्राप्त होती है, किन्तु सेवा एवं उत्तरदायित्व की भावना कमजोर पड़ सकती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को पृथ्वी के प्रति अपने दायित्व का बोध होना चाहिए तथा उसका सम्मान एवं संरक्षण करना चाहिए। तभी सतत विकास) Sustainable Development) की संकल्पना सार्थक हो सकती है। यही भारतीय संस्कृति की मूल चेतना है।

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।" (अथर्ववेद, भूमिसूक्त 12.1.12)

अर्थात्— पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं।

इसी प्रकार जैमिनि का सूत्र है—

"न भूमिः स्यात् सर्वान् प्रति अविशिष्टत्वात्।"

अर्थात् भूमि पर किसी एक व्यक्ति का विशिष्ट अधिकार नहीं हो सकता, क्योंकि वह सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध है।

"भूमि राजा का धन नहीं है। अपने-अपने कर्मों का फल भोगने वाले समस्त प्राणियों का उस भूमि पर समान अधिकार है। यह केवल मनुष्यों का ही नहीं, अपितु समस्त पशु-पक्षियों तथा अन्य जीवों का भी अधिकार क्षेत्र है।"

इस भाव को संस्कृत में इस प्रकार व्यक्त किया गया है—

"न राज्ञो भूमिर्धनम्। किन्तु तस्यां भूमौ स्वकर्मफलभुजानां सर्वेषां प्राणिनां साधारणं धनम्।"

(माधवाचार्य उद्धृत(

संदर्भ: विनोबा, संपादन :पराग चोलकर, पृष्ठ 47, ग्राम स्वराज, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, 2013।

उपर्युक्त विचार भारतीय ऋषियों की सनातन चिंतनधारा को अभिव्यक्त करते हैं, जिसके अनुसार पृथ्वी समस्त प्राणियों के लिए समान रूप से उपलब्ध है। इसी भावना को आचार्य

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

विनोबा भावे ने अपने भूदान आंदोलन के माध्यम से सामाजिक चेतना का स्वरूप प्रदान किया। उनके विचारों में भूमि का सम्मान, उसका संवर्धन, उसकी उर्वरता तथा उसके संरक्षण की चिंता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इसी कारण उन्हें महात्मा गांधी का वैचारिक उत्तराधिकारी भी माना जाता है।

महात्मा गांधी के अनुसार, "प्रकृति प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकता की पूर्ति कर सकती है, किन्तु किसी एक व्यक्ति के लोभ की नहीं।" उनका दृढ़ विश्वास था कि समस्त ब्रह्माण्ड एक ही वैश्विक आत्मा द्वारा संचालित है और वही चेतना समस्त जीवों एवं समस्त मानवता में व्याप्त है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को समस्त सृष्टि को अपना मानते हुए लोककल्याण की भावना से कार्य करना चाहिए। यही अहिंसा का मूल आधार है, जिसे गांधीजी ने मन, वचन और कर्म से स्वीकार किया।

इसी संदर्भ में गांधीजी सत्याग्रह को सत्य के प्रति आग्रह तथा आत्मशुद्धि का साधन मानते हैं। उनके अनुसार सत्याग्रह न केवल व्यक्ति के अंतःकरण को पवित्र बनाता है, बल्कि समाज में नैतिकता, करुणा एवं मानवता की भावना को भी सुदृढ़ करता है। यही विचार मनुष्य को मनुष्यता से जोड़ते हैं।

गांधीजी की यही मूल जीवन-दृष्टि सतत विकास) Sustainable Development), ग्राम स्वराज, आत्मनिर्भरता, पंचायती राज, हरित क्रांति तथा सर्वोदय जैसी अवधारणाओं में परिलक्षित होती है। उन्होंने अपने आर्थिक चिंतन में भी ऐसे विकास मॉडल का समर्थन किया, जिसमें प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखते हुए समाज के प्रत्येक वर्ग का कल्याण सुनिश्चित हो सके।

प्रसिद्ध पर्यावरण इतिहासकार रामचन्द्र गुहा का भी मत है कि गांधीजी की साधारण एवं प्रकृति-सम्मत जीवनशैली आज के पर्यावरणीय संकट के समाधान की दिशा में अत्यंत प्रासंगिक है। उनके अनुसार, प्रकृति का अंधाधुंध दोहन किए बिना भी विकास संभव है। सतत विकास का वास्तविक आधार मनुष्य की निःस्वार्थ भावना, संयमित उपभोग तथा प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व में निहित है। तभी विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँच सकता है।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण के प्रति आदरभाव भारतीय सनातन दृष्टि में आत्मा के समान व्याप्त है। यही कारण है कि वेदों में प्रकृति के प्रत्येक तत्त्व को सृष्टि के लिए अनिवार्य मानते हुए उसे सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है। वायु, अग्नि, वनस्पति, जल तथा पृथ्वी जैसे प्राकृतिक तत्त्वों के संवर्धन एवं संरक्षण के संबंध में वैदिक ऋषियों द्वारा किया गया चिंतन एवं मनन आज भी मानव समाज के लिए प्रेरणास्रोत है।

आधुनिक विज्ञान की भाषा में इसे पारिस्थितिक ज्ञान) Ecological Knowledge), पारिस्थितिक संतुलन) Ecological Balance) अथवा पर्यावरणीय चेतना) Environmental

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

Awareness) कहा जा सकता है। सूर्य नमस्कार, नदियों की पूजा, पर्वतों की पूजा, जल का तर्पण तथा प्रकृति से संबंधित अन्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएँ वस्तुतः इन्हीं पर्यावरणीय मूल्यों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति हैं, जिनका उल्लेख भारतीय ज्ञान-परम्परा के विभिन्न स्रोतों में प्राप्त होता है।

अथर्ववेद का प्रसिद्ध शान्ति-पाठ सम्पूर्ण प्रकृति में शान्ति, संतुलन एवं सामंजस्य की कामना करता है—

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः। पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः।

सर्वं शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

अर्थात्— आकाश, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, जल, औषधियों, वनस्पतियों तथा समस्त सृष्टि में शान्ति एवं संतुलन की स्थापना हो। यह मंत्र इस सत्य का उद्घोष करता है कि प्रकृति के प्रत्येक तत्त्व में चेतना एवं दिव्यता का वास है, अतः उनके प्रति सम्मान, संरक्षण एवं संतुलित व्यवहार मानव का नैतिक दायित्व है।

हमारे समूचे साहित्य, दर्शन, कला एवं संस्कृति में वृक्ष, नदियाँ, पर्वत, मेघ, पक्षी तथा पशु-पक्षियों का चित्रण भारतीय पर्यावरणीय चेतना का सशक्त प्रतीक है। भारतीय मनीषा ने सदैव सतत विकास) Sustainable Development) की भावना को स्वीकार किया है। इसलिए भारतीय दृष्टिकोण में पारिस्थितिकी तंत्र तथा पर्यावरण को केवल उपभोग की वस्तु नहीं माना गया, बल्कि उन्हें सृष्टि के अनिवार्य एवं पूजनीय तत्त्व के रूप में स्वीकार किया गया है। उनका संरक्षण, संवर्धन तथा संतुलित उपयोग ही मानव कल्याण और विश्व-मंगल का आधार माना गया है।

यही पर्यावरण के प्रति भारतीय सनातन दृष्टि का मूल स्वरूप है।

संदर्भ ग्रंथ

1. तैत्तिरीय उपनिषद्। गीता प्रेस, गोरखपुर।
2. श्रीमद्भगवद्गीता। गीता प्रेस, गोरखपुर।
3. अग्रवाल, वासुदेव शरण। कला और संस्कृति। प्रभात प्रकाशन।
4. अग्रवाल, वासुदेव शरण। भारत सावित्री। प्रभात प्रकाशन।
5. ऋग्वेद। संकलित संस्करण।
6. विनोबा भावे। ग्राम स्वराज। सर्व सेवा संघ प्रकाशन।
7. महात्मा गांधी : जीवन-दर्शन एवं वर्तमान चुनौतियाँ। निखिल प्रकाशन।
8. अथर्ववेद। संकलित संस्करण।
9. प्रश्नोपनिषद्। गीता प्रेस, गोरखपुर।